कैदी और कोकिला

कविता का सार / प्रतिपाद्य

यह कविता उस समय लिखी गई थी, जब कवि जबलपुर जेल में कारावास की सज़ा काट रहा था। आज़ादी पाने के लिए भारतवासियों द्वारा भरसक प्रयास किए जा रहे थे। सरकार स्वतंत्रता सेनानियों के हौसले तथा मनोबल तोड़ने के लिए उन्हें जेलों में बंद कर देती थी। कवि भी इसी कारण से जेल में बंद था। एक दिन जेल में आधी रात में कोयल के कूकने का स्वर सुनाई देता है। अतः कोयल को अपनी आवाज़ बनाकर कवि जेल में होने वाले अत्याचारों को व्यक्त करता है। कोयल की आवाज़ उसे लोगों में आज़ादी का अलख जगाती प्रतीत हो रही है। कोयल लोगों को गुलामी का जीवन छोड़ आज़ादी से साँस लेने के लिए प्रेरित करती है।

कविता का भाव

➽ हमें आज़ादी का मूल्य समझना चाहिए। जीवन में आज़ादी एक बहुमूल्य रत्न के समान है। अतः उसे बनाए रखने और पाने के लिए हमेशा प्रत्यनशील रहना चाहिए।

भाषा शैली की विशेषताएँ

➽ सरल भाषा
➽ प्रवाहमयी भाषा
➽ मुक्त छंद का प्रयोग
➽ अलंकारों का सुंदर प्रयोग
➽ गेयता का गुण विद्यमान
➽ ओजगुण से युक्त
➽ उर्दू तथा तत्सम शब्दों का प्रयोग
➽ नाद सौंदर्य व्याप्त

कविता का उद्देश्य

➽ भारत के स्वतंत्रता सेनानियों की दशा का वर्णन।

कविता से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

➽ यह कविता हमें देश की आज़ादी तथा अपनी आज़ादी के प्रति सदैव प्रयत्नशील रहने का संदेश देती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in